881/771

दैनिक जागरण
पृ० - 8
27-05-2014

सतत कृषि बदलते वक्त की जरूरत : शिवाजी पांडेय

- पूसा स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में हुआ व्याख्यान
- कहा, कृषि पैदावार में 60 फीसद की बढ़ोतरी की आवश्यकता

जागरण संवाददाता, पश्चिमी दिल्ली : संसाधनों के अंधाधुंध इस्तेमाल ने कृषि को दीर्घकालिक नुकसान पहुंचाया है। ऐसे में आज कृषि के बजाय सतत कृषि की अवधारणा पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। सतत कृषि से न सिर्फ आज की जरूरतें पूरी करेंगे, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी एक अच्छी व उर्वर भूमि छोड़कर जाएंगे। रोम स्थित खाद्य एवं कृषि संगठन में विशेष सलाहकार व जाने माने कृषि वैज्ञानिक डॉ. शिवाजी पांडेय ने सतत कृषि को पर्यावरण व विश्व संरक्षण से जोड़ते हुए कहा कि आज इस दिशा में न सिर्फ सरकारी प्रयास, बल्कि सामूहिक भागीदारी की भी जरूरत है।

डॉ. पांडेय राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा में डॉ. बीपी पाल स्मृति व्याख्यान समारोह को संबोधित कर रहे थे। व्याख्यान का विषय सतत कृषि था। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के पूर्व महानिदेशक डॉ. मंगला राय ने की। इस अवसर पर संस्थान के महानिदेशक डॉ एचएस गुप्ता सहित अनेक वैज्ञानिक उपस्थित थे।

अपने व्याख्यान में डॉ पांडेय ने कहा कि वर्ष 2050 तक दुनिया की आबादी में 9.3 अरब होने का अनुमान है। उस स्थिति में कृषि पैदावार में 60 फीसद की बढ़ोतरी की आवश्यकता होगी। इसमें विकासशील देशों में यह आंकड़ा सौ फीसदी तक पहुंच जाएगा। इतनी बड़ी जरूरत को खाद्य सुरक्षा उपलब्ध कराना बड़ी चुनौती है।

प्राकृतिक संसाधनों को हुआ फायदा : उन्होंने कहा कि अभी तक हरित क्रांति के सहारे दुनिया ने कृषि भूमि के महज 12 फीसद विस्तार से उत्पादन क्षमता में तीन गुणा वृद्धि की उपलब्धि पा ली। वैज्ञानिक अनुसंधानों के सहारे हासिल की गई इस उपलब्धि का सबसे बड़ा फायदा हमारे प्राकृतिक संसाधनों को हुआ। हमारे जंगल कटने से बच गए।

भुखमरी व कुपोषण बड़ी समस्या: वैज्ञानिक उपलब्धियों के सहारे कृषि पैदावार में जरूर अभूतपूर्व वृद्धि हो गई लेकिन इस उपलब्धि का एक दुखद पहलू भी है। इसके लिए पानी व खाद का अंधाधुंध इस्तेमाल किया गया। ऐसे में अब तक कि कृषि से जुड़ी उपलब्धि को सतत विकास नहीं कहा जा सकता है। आज भी दुनिया के कई हिस्सों में भूखमरी व कुपोषण एक बड़ी समस्या है।

आदर्श संतुलन जरूरी : डॉ. पांडेय ने कहा कि आज दुनिया को ऐसी कृषि की जरूरत है, जिसमें मानवीय जरूरतों व प्राकृतिक संसाधनों के बीच आदर्श संतुलन की स्थिति न सिर्फ वर्तमान में बल्कि भविष्य के लिए भी कायम हो। तभी वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए हम खाद्य सुरक्षा उपलब्ध करा सकेंगे। इस उद्देश्य के लिए सरकारी तंत्र में सुशासन की भी जरूरत होगी।

प्रतिलिपि:-
1. निदेशक कार्यालय
2. संयुक्त निदेशक (प्रसार)
3. अधिष्ठाता/संयुक्त निदेशक (शिक्षा)
4. प्रभारी, यू. एस. आई
5. प्रभारी कृषि
6. प्रभारी, पी. पी. आई.

सुनीता गुप्ता 27/5
प्रभारी पत्रिका एवं समाचार पत्र अनुभाग